an>

Title: Regarding need to check the increasing pollution in Singrauli district, Madhya Pradesh.

श्रीमती रीती पाठक (सीधी) : हवा और पानी प्राणी मातृ की अनिवार्य आवश्यकता है जिसके अभाव में जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है किंतु पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटक हवा और पानी ही यदि प्रदूÂिाित हो जाएं तो जीवन जीना कितना कठिन होगा, यह सहज ही अकल्पनीय है। पर्यावरण प्रदूÂाण एक अति गंभीर वैश्विक समस्या है। "ग्लोवल वार्मिंग" जैसी समस्याएं इसी पर्यावरण प्रदूÂाण का परिणाम है जिसकी चिंता राÂट्रीय व वैश्विक स्तर पर की जा रही है।

मैं जिस सीधी (मध्य प्रदेश) संसदीय क्षेत्र से आती हूँ, उसका एक बड़ा हिस्सा सिंगरौली जिले के रूप में अवस्थित है जिसे लोग राजधानी के रूप में जानते हैं। सिंगरौली में सन् 1840 में पहली बार कोयले की पर्याप्त उपलब्धता का विÂाय संज्ञान में आया तब से लेकर आज तक अपने प्राकृति स्रोतों के कारण सिंगरौली देश के बड़े भू-भाग को ऊर्जा प्रदान करता है। इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के कारण कई बड़े और छोटे थर्मल पावर प्रोजेक्ट, कोल माइन प्रोजेक्ट स्थित हैं, जिसमें उत्पन्न होने वाले सह-उत्पाद फ्लाई ऐश इतने बढ़े कि वायु और जल प्रदूÂाण का कारण बन गया है जिससे सिंगरौलीवासियों का श्वास लेना दूभर हो गया है। पर्याप्त जानकारी के अनुसार लगभग 6 मिलियन टन फ्लाई ऐश प्रतिवÂार्न सह-उत्पाद के रूप में निकलता है व शोधों एवं अभिलेखों के आधार पर लगभग 720 कि.ग्रा. पारा व कई भारी पदार्थ प्रतिवÂार्न निकलते हैं जो सामान्य से कई गुना अधिक है।

संयुक्त राÂट्र पर्यावरण कार्यक्रम की रिपोर्ट व औद्योगिक विÂा विज्ञान केंद्र, लखनऊ (उ.प्र.) द्वारा जब सिंगरौली क्षेत्र के 1200 निवासियों का चिकित्सकीय जाँच हुई तो उसके अनुसार सिंगरौलीवासियों के रक्त में पारा का स्तर सामान्य से कई गुना अधिक पाया गया जिसके कारण बहुत अधिक मात्रा में बच्चों को श्वासतंत्र की समस्या, डायरिया, निम्न प्रत्युतपन्नमति, पेट दर्द जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहा बचपन, साथ ही महिलाओं में सिर दर्द और अनियमित मेन्सुरेशन और पुरूÂाोो में स्थायी रूप से तंत्रिका तंत्र, मस्तिÂक और किडनी जैसी गंभीर प्राण घातक बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं।

अतः केंद्र सरकार से मेरा आग्रह है कि शीघ्रता के साथ सिंगरौली के स्वास्थ्य व जीवन रक्षा हेतु सार्थक कदम उठाने का कÂट करें और सभी कॉर्पोरेट को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों का बोध कराकर आवश्यक पहल हेतु निर्देशित करें, वरना सिंगरौली का प्रदूÂाण हिरोशिमा-नागासाकी व भोपाल गैस त्रासदी जैसे घातक परिणाम देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।